"रमईआ"

• भवखंडन दुखभंजन स्वामी भगति वछल निरंकारे । कोटि पराध मिटे खिन भीतरि जां गुरमुखि नाम समारे ।

अर्थः- हे जनम - मरण के चक्कर नाश करने वाले ! हे दुखों का नाश करने वाले ! हे मालिक ! हे भक्ति से प्यार करने वाले ! हे आकार रहित ! जब कोई मनुष्य गुरु की शरण पड़ कर तेरा नाम दिल में बसाता है, उसके करोड़ों पाप एक छिन में मिट जाते हैं ।

मेरा मन लागा है राम पिआरे । दीन दइआल करी प्रभि किरपा वसि कीने पंच दूतारे ।

अर्थः- हे भाई ! मेरा मन प्यारे परमात्मा के नाम से लगा हुआ है । दीनों पर दया करने वाले प्रभु ने खुद ही कृपा की है, और पाँचों कामादिक वैरी मेरे वश में कर दिए हैं ।

तेरा थान सुहावा रुप सुहावा तेरे भगति सोहहि दरबारे ।
सरब जीआ के दाते सुआमी करि किरपा लेह उबारे ।

अर्थः- हे प्रभु ! तेरा स्थान सुंदर है, तेरा रूप सुंदर है । तेरे भक्त तेरे दरबार में सुंदर लगते हैं । हे सारे जीवों को दातें देने वाले मालिक प्रभु ! मेहर कर मुझे कामादिक वैरियों से बचाए रख ।

तेरा वरन न जापै रुप न लखीऐ तेरी कुदरति कउन बीचारे ।
। जलि थलि महीअलि रविआ सब ठाई अगम रुप गिरधारे ।

अर्थः- हे प्रभु ! तेरा कोई रंग नहीं दिखता तेरी कोई सूरति नहीं दिखती । कोई मनुष्य नहीं सोच सकता कि तू कितना ताकतवर है । हे अगम्य पहुँच से परे परमात्मा ! तू पानी में धरती पर आकाश में हर जगह मौजूद है ।

कीरति करहि सगल जन तेरी तू अबिनासी पुरख मुरारे ।
जिउ भावै तिउ राखहु सुआमी जन नानक सरनि दुआरे ।

अर्थः- हे मुरारी ! तू नाश रहित है अविनाशी है तू सर्व व्यापक है, तेरे सारे सेवक तेरी महिमा करते हैं । हे दास नानक ! कह हे स्वामी ! मैं तेरे दर पर आ गिरा हूँ, मैं तेरी शरण आया हूँ । जैसे तुझे अच्छा लगे, उसी तरह मेरी रक्षा कर ।

करि किरपा दीओ मोहि नामा बंधन ते छुटकाए । (मीन भंवरा कुप) मन ते बिसरिओ सगलो धंधा गुर की चरणी लाए ।

अर्थः- हे भाई ! साध - संगत ने कृपा करके मुझे परमात्मा का नाम दिया, और गुरु के चरणों में लगा के मुझे माया के बंधनो से छुड़ा लिया जिस के कारण मेरे मन से सारा झगड़ा - झमेला उतर गया ।

साध संगि चिंत बिरानी छाडी । अहंबुधि मोह मन बासन दे करि गढहा गाडी ।

अर्थः- हे भाई ! साध - संगत में आ के मैंने पराई आशा छोड़ दी है । अहंकार, माया के मोह, मन की वासना इन सभी को गड्ढा खोद के दबा दिया सदा के लिए दबा दिया ।

ना को मेरा दुसमन रहिओ ना हम किस के बैराई । ब्रहम पसार पसारिओ भीतरि सतिगुर ते सोझी पाई ।

अर्थः- हे भाई साध - संगत की इनायत से मेरा कोई दुश्मन नहीं रह गया मुझे कोई वैरी नहीं दिखता, मैं भी किसी का वैरी नहीं बनता । मुझे गुरु से ये समझ प्राप्त हो गई है कि ये सारा जगत पसारा परमात्मा खुद ही है, सबके अंदर परमात्मा ने खुद ही खुद को बिखेरा हुआ है ।

सभ को मीत हम आपन कीना हम सभना के साजन । दूरि पराइओ मन का बिरहा ता मेल कीओ मेरै राजन ।

अर्थः- हे भाई ! साध - संगत की इनायत से हरेक प्राणी को मैं अपना मित्र समझता हूँ, मैं भी सबका मित्र - सज्जन ही बना रहता हूँ । मेरे मन का परमात्मा से बना हुआ विछोड़ा साध - संगत की कृपा से कहीं दूर चला गया है, जब से मैंने साध - संगत में शरण ली, तब से मेरे प्रभु - पातशाह ने मुझे अपने चरणों का मिलाप दे दिया है ।

बिनसिओ ढीठा अम्रित वूठा सबद लगो गुर मीठा । जलि थलि महिअलि सरब निवासी नानक रमईआ डीठा ।

(5-670-671)

अर्थः- हे भाई ! साध - संगत की कृपा से मेरे मन का ढीठ - पन समाप्त हो गया है, मेरे अंदर आत्मिक जीवन देने वाला नाम जल आ बसा है, गुरु का शब्द मुझे प्यारा लग रहा है । हे नानक ! कह हे भाई ! अब मैंने जल में, धरती में, आकाश में सब जगह बसने वाले सुंदर राम को देख लिया है ।

• सगल वनसपति महि बैसंतर सगल दूध महि घीआ । ऊंच नीच महि जोति समाणी घटि घटि माधउ जीआ।

अर्थः- हे भाई ! जैसे सब पौधों में आग गुप्त रूप में मौजूद है, जैसे हरेक किस्म के दूध में घी, मक्खन गुप्त मौजूद है वैसे अच्छे - बुरे सब जीवों में प्रभु की ज्योति समाई हुई है परमात्मा हरेक शरीर में है सब जीवों में है ।

संतहु घटि घटि रहिआ समाहिओ । पूरन पूरि रहिओ सरब महि जलि थलि रमईआ आहिओ ।

अर्थः- हे संत जनो ! परमात्मा हरेक शरीर में मौजूद है । वह पूरी तरह सारे शरीरों में व्यापक है, वह सुंदर राम पानी में है, धरती में है ।

गुण निधान नानक जस गावै सतिगुरि भरम चुकाइओ । सरब निवासी सदा अलेपा सभ महि रहिआ समाइओ ।

अर्थः- हे भाई ! नानक उस गुणों के खजाने परमात्मा की महिमा के गीत गाता है । गुरु ने नानक का भुलेखा दूर कर दिया है तभी तो नानक को यकीन है कि परमात्मा सब जीवों में बसता है फिर भी सदा माया के मोह से निर्लिप है, सब जीवों में समा रहा है ।

जा के सिमरणि होइ अनंदा बिनसै जनम मरण भै दूखी । चारि पदारथ नव निध पावहि बहुर न त्रिसना भुखी ।

अर्थः- हे भाई ! जिस प्रभु के स्मरण से तू खुशियों भरा जीवन जी सकता है तेरे जनम - मरण के सारे डर और दुख दूर हो सकते हैं, तू धर्म -अर्थ - काम - मोक्ष चारों पदार्थ और दुनिया के नौ के नौ खजाने हासिल कर सकता है, जिसके स्मरण से तुझे माया की प्यास भूख फिर नहीं व्यापेगी उसका स्मरण हरेक सांस के साथ करता रह ।

जा को नाम लैत तू सुखी । सासि सासि धिआवहु ठाकुर कउ मन तन जीअरे मुखी ।

अर्थः- हे जीव ! जिस परमात्मा का नाम स्मरण करने से तू सुखी हो सकता है, उस पालनहार प्रभु को अपने मन से तन से मुँह से हरेक सांस से स्मरण किया कर ।

साति पावहि होवहि मन सीतल अगनि न अंतरि धुखी । गुर नानक कउ प्रभू दिखाइआ जलि थलि त्रिभवणि रुखी ।

अर्थः- हे भाई ! नाम जपने की इनायत से तू शाति हासिल कर लेगा, तू अंतरात्मे शीतलता से भर जाएगा, तेरे अंदर तृष्णा की आग नहीं धधकेगी । हे भाई ! गुरु ने मुझे नानक को वह परमात्मा पानी में धरती में वृक्षों में सारे संसार में बसता दिखा दिया है ।

काम क्रोध लोभ झूठ निंदा इन ते आपि छडावहु । इह भीतर ते इन कउ डारहु आपन निकटि बुलावहु ।

अर्थः- हे प्रभु ! काम - क्रोध - लोभ - झूठ - निंदा आदि इन सारे विकारों से तू मुझे स्वयं छुड़ा ले । मेरे इस मन में से इन विकारों को निकाल दे, मुझे अपने चरणों में जोड़े रख ।

अपनी बिधि आपि जनावहु । हरि जन मंगल गावहु ।

अर्थः- हे प्रभु ! अपनी भक्ति की विधि तू मुझे खुद सिखा । मुझे प्रेरणा दे कि कि मैं तेरे संत जनों के साथ मिल के तेरी महिमा के गीत गाया करूँ ।

बिसर नाही कबहू हीए ते इह बिधि मन महि पावहु । गुर पूरा भेटिओ वडभागी जन नानक कतहि न धावहु । (5-617)

अर्थः- हे प्रभु ! मेरे मन में तू ऐसी शिक्षा डाल दे कि मेरे हृदय में से तू कभी ना बिसरे । हे दास नानक ! तुझे बड़े भाग्यों से पूरा गुरु मिल गया है, अब तू किसी और की तरफ ना दौड़ता फिर ।

• चेति गोविंद अराधिऐ होवै अनंद घणा । संत जना मिलि पाईऐ रसना नाम भणा ।

अर्थः- चेत में बसंत ऋतु आती है, हर तरफ खिली फुलवाड़ी मन को आनंद देती है, अगर परमात्मा को स्मरण करें तो नाम जपने की इनायत से बहुत आत्मिक आनंद हो सकता है ।

जिनि पाइआ प्रभु आपणा आए तिसहि गणा । इक खिन तिस बिन जीवणा बिरथा जनम जणा ।

अर्थः- पर जीभ से प्रभु का नाम जपने की दाति संत जनों को मिल के ही प्राप्त होती है । उसी को जगत में पैदा हुआ जानो उसी का जनम सफल समझो जिस ने नाम जपने की सहायता से अपने परमात्मा का मिलाप हासिल कर लिया क्योंकि परमात्मा की याद के बिना एक छिन मात्र समय गुजारा हुआ भी व्यर्थ बीता जानो ।

जलि थलि महीअलि पूरिआ रविआ विचि वणा । सो प्रभ चिति न आवई कितड़ा दुख गणा ।

अर्थः- जो प्रभु पानी में धरती में आकाश में जंगलों में हर जगह व्यापक है । अगर ऐसा प्रभु किसी मनुष्य के हृदय में ना बसे, तो उस मनुष्य का मानसिक दुख बयान नहीं हो सकता ।

जिनी राविआ सो प्रभ तिनां भाग मणा । हरि दरसन कद मन लोचदा नानक पिआस मना । चेति मिलाए सो प्रभ तिस के पाइ लगा । (5-133)

अर्थः- पर जिन लोगों ने उस सर्व व्यापक प्रभु का अपने हृदय में बसाया है, उनके बड़े भाग्य जाग पड़ते हैं । नानक का मन भी हरि के दीदार की इच्छा रखता है, नानक के मन में हरि दर्शन की प्यास है । जो मनुष्य मुझे हरि का मिलाप करा दे मैं उसके चरणी लगूंगा ।

• सरणि पए प्रभ आपणे गुर होआ किरपाल । सतगुर के उपदेसिऐ बिनसे सरब जंजाल । अंदर लगा राम नाम अंमृत नदर निहाल ।

अर्थः- जिस मनुष्य पर गुरु दयावान होता है वह अपने परमात्मा की शरण पड़ता है । गुरु के उपदेश की इनायत से उस मनुष्य के माया मोह वाले सारे जंजाल नाश हो जाते हैं । उसका हृदय परमात्मा के नाम में जुड़ा रहता है परमात्मा की मेहर की निगाह से उसका हृदय आनन्दित रहता है ।

मन मेरे सतिगुर सेवा सार । करे दइआ प्रभ आपणी इक निमख न मनहु विसार ।

अर्थः- मेरे मन ! गुरु की बताई हुई सेवा ध्यान से कर, परमात्मा को आंख झपकने जितने समय के लिए भी अपने मन से ना भुला । जो मनुष्य ये उद्यम करता है, परमात्मा उस पर अपनी मेहर करता है ।

गुण गोविंद नित गावीअहि अवगुण कटणहार । बिन हरिनाम न सुख होई करि डिठे बिसथार । सहजे सिफती रतिआ भवजल उतरे पार ।

अर्थः- हे भाई ! सदा परमात्मा के गुण गाने चाहिए । परमात्मा के गुण सारे अवगुणों को काटने में समर्थ हैं । हमने माया के अनेक पसारे करके देख लिए हैं अर्थात, ये यकीन जानों कि माया के अनेक खिलारों के खिलारने पर परमात्मा के नाम के बिना आत्मिक आनन्द नहीं मिलता । आत्मिक अडोलता में टिक के परमात्मा की महिमा में प्यार डालने से जीव संसार समुंदर से पार लांघ जाते हैं ।

तीरथ वरत लख संजमा पाईऐ साधू धूरि । लूकि कमावै किस ते जा वेखै सदा हदूरि । थान थनंतरि रवि रहिआ प्रभ मेरा भरपूरि ।

अर्थः- हे भाई ! गुरु के चरणों की धूर प्राप्त करनी चाहिए । यही है तीर्थों के स्नान, यही है बरत रखने, यही है इन्द्रियों को बस में रखने वाले लाखों उद्यम परमात्मा इन बाहरले धार्मिक संजमों से नहीं पतीजता, वह तो जीवों के अंग - संग रह के सदा जीवों के सभ छुप के किए काम भी देखता है फिर भी मूर्ख मनुष्य किस से छुप के गलत काम करता है ? परमात्मा तो हरेक जगह पर पूरी तौर पर व्यापक है ।

सच पातिसाही अमर सच सचे सचा थाण । सची कुदरति धारीअन सचि सिरजिओन जहान । नानक जपीऐ सच नाम हउ सदा सदा कुरबान । (5-48)

अर्थः- परमात्मा की पातशाही सदा कायम रहने वाली है । परमात्मा का हुक्म अटल है । सदा स्थिर रहने वाले परमात्मा का स्थान भी

सदा कायम रहने वाला है ! उस सदा स्थिर परमात्मा ने अटल कुदरत रची हुई है और ये सारा जगत पैदा किया हुआ है । उस सदा स्थिर रहने वाले परमात्मा का नाम स्मरणा चाहिए । हे नानक ! कह मैं उस परमात्मा से सदा ही सदके जाता हूं ।

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि – "रागमई प्रकाशित सुगधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नहीं हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"